(2) भूगोल के ऐतिहासिक विकास के साथ-साथ भूगोल में द्वैतवाद की विचारधारा का विकास हुआ। इसी क्रम में निश्चयवाद एवं सम्भववाद के विचारधारा का जन्म हुआ।

निश्चयवाद को पर्यावरण निश्चयवाद भी कहा जाता है इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य प्रकृति का दास है पर्यावरण सर्वशक्तिमान है और वह मनुष्य के सभी क्रियाकलापों को नियंत्रित करता है प्राकृतिक शक्तियों के सामने मानव बहुत ही छोटा है। इसके अनुसार मानवीय व्यवहार में अन्तर का कारण प्राकृतिक व्यवहार में अन्तर है मनुष्य प्रकृति का दास है।

सहारे के पश्चिमी - अफ्रीका के सहारा मरुस्थल के कालाहारी, अरबी ध्रुव के एस्किमो सभी की क्रियाविधियाँ प्राकृति द्वारा नियंत्रित होती हैं विभिन्न चिंतकों ने भी अपने विचारों द्वारा पर्यावरणीय निश्चयवाद

की पुष्टि की है।

अरस्तू - इनके अनुसार मानव व्यवहार पर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है। इनके अनुसार यूरोप के शीत प्रदेश के निवासी कठिन जलवायु के कारण साहसी और वीर होते हैं किन्तु पीछे होते हैं विज्ञान प्रौद्योगिकी में ये लोग राजनीतिक संगठन बनाने में अकुशल होते हैं।

एशिया के निवासी विचारवान एवं दक्ष होते हैं किन्तु उनमें साहस की कमी होती है। उनमें दासता की स्थिति होती है।

अरस्तू के अनुसार यूनान के निवासी उत्तम गुणों से सम्पन्न एवं सभी पर शासन करने योग्य होते हैं। अरस्तू का यह दृढ़ विश्वास था कि कुछ राष्ट्रों की प्रगति वहाँ पाये जाने वाले अनुकूल पर्यावरण का परिणाम है।

स्ट्रैबो (Strabo) :- इनके अनुसार ढाल, उच्चावच जलवायु प्राकृतिक तत्व हैं, जो मानवीय जीवन शैली व व्यवहार को प्रभावित करते

करते हैं। इटली का आकार, आकृति तथा जलवायु विभिन्न क्षेत्रों से स्थानिक सम्बन्ध रोमन साम्राज्य के प्रसार के कारण हैं।

माण्टेस्क्यू :- उष्ण जलवायु में शारीरिक दृष्टि से कायर कमजोर और आलसी लोग होते हैं।

शीत जलवायु में शारीरिक दृष्टि से बलवान साहसी कम अविश्वासी कम चालाक और स्पष्टवादी लोग होते हैं।

अलकमसूदी :- अधिक जल प्रदेश के निवासी प्रसन्न विनोदी होते हैं। शुष्क प्रदेशों के निवासी चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं।

18वीं, 19वीं और 20वीं शताब्दी के आरम्भिक काल में पर्यावरण निश्चयवाद का बोलबाला रहा इस अवधि के प्रमुख विद्वान थे हम्बोल्ट, रिटर, रैटजेल और सैम्पल आदि थे।

हम्बोल्ट :- । COSMOS में लिखा कि तापमान, वायुभार, पवन की दिशा मानवीय क्रियाकलापों का नियंत्रण करती है। इन्होंने शुमध्यसागरी जलवायु को सबसे उपयुक्त माना।

कार्ल रिटर :- आधुनिक प्रमुख पुस्तक.

पर्यावरण के तत्व मानवीय क्रियाकलापों को ही नहीं बल्कि मानवीय चरित्र को भी प्रभावित करते हैं

चार्ल्स डार्विन (Origin of species) के अनुसार भी जीवों की उत्पत्ति एवं विकास पर पर्यावरण का प्रभाव है.

रैटजेल :- पुस्तक Anthropogeography

पर्यावरणीय निश्चयवाद का समर्थक. समान स्थितियाँ समान जीवन शैली को जन्म देती हैं. रैटजेल "योग्यतम की उत्तरजीविता" मानव पर्यावरण की उपज है और पर्यावरण की प्राकृतिक शक्तियाँ ही मानव जीवन को ढालती हैं

सेम्पल ने भी पर्यावरण को ही महत्व दिया है।

सम्भववाद (Possibilism) यह एक ऐसी विचारधारा है जिसके अनुसार मानव पर्यावरण की कठपुतली या दास नहीं है बल्कि वह प्रकृति से प्रभावित होता है तथा वह अपनी

Scanned with CamScanner

बुद्धि एवं कार्यकुशलता के आधार पर पर्यावरण को प्रभावित करता है समय के साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति होती है और मनुष्य प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित कर लेता है।

नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ पर नियंत्रण एवं सूखा प्रभावित क्षेत्रों में सिंचाई की उपलब्धता एवं जल विद्युत का उत्पादन इसका एक प्रमुख उदाहरण है मानव सभ्यता के विकास को ध्यान में रखते हुए विश्व भर के भूगोल वेत्ताओं ने निश्चयवाद को छोड़कर सम्भववाद को अपनाना शुरू कर दिया।

पी० हैगेट के अनुसार :

"निश्चयवाद के विपरीत सम्भववाद भौगोलिक स्थिति के होते हुए भी मनुष्य को व्यवहार के वैकल्पिक प्रारूप का चयन करने की स्वतंत्रता पर बल देता है।"

लुसियन फेब्रे :- पुस्तक "Geographical Introduction to History" में सम्भववाद की संकल्पना का प्रयोग। उनके अनुसार मनुष्य एक भौगोलिक अभिकर्ता है और वह यन्त्रवत नहीं है"

Scanned with CamScanner

उनका विश्वास था कि मानवीय तत्व भौगोलिक तत्व से अधिक महत्वपूर्ण है।

विडाल-डी-ला ब्लाश :- सही अर्थों में सम्भववाद का संस्थापक माना जाता है। "Principles of Human Geography" के नाम से प्रकाशित हुई। ब्लाश ने मनुष्य को सक्रिय भौगोलिक कारक माना। उनके अनुसार मनुष्य प्रकृति के सजीव और निर्जीव दोनों तत्वों में सक्रिय परिवर्तन करती है। उनके अनुसार "प्रकृति एक परामर्शदाता से अधिक कभी नहीं होती है।"

जीन ब्रून :- पुस्तक Human Geography. ब्लाश का शिष्य और सम्भववाद का कट्टर समर्थक था। इनके अनुसार प्रकृति मनुष्य के लिए कि कुछ सीमायें लागू करती है यद्यपि मनुष्य इन सीमाओं को पूर्णतया नहीं लांघ सकता किन्तु इनमें परिवर्तन अवश्य कर सकता है।

Scanned with CamScanner

बोमैन, बोरो आदि विद्वानों ने भी सम्भववाद का समर्थन किया।

किन्तु समय बीतने के साथ सम्भववाद की भी आलोचना होने लगी और आगे चल कर नव-निश्चयवाद की अवधारणा ने जन्म लिया जो आज भी प्रासंगिक एवं सबसे आधुनिक विचार है।

Scanned with CamScanner